अष्टादश विद्यास्थान एवं चतुषष्ठिकला
भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार

2025

वेबफलकाश्रित त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीया शोध संगोष्ठी

श्रृंखला-06
भारतीयज्ञान-विज्ञानसप्ताह
05-11 Sep, 2025

The First — 11.04.2020
International Sanskrit Webinar Series

Participation-

- 600+ Attendees,
- 19 Universities,
- 8 Countries,
- 48 Allied Fields,
- 23 Speakers,
- 5 Vice-Chancellors,
- 3 Former Vice Chancellors.

The First Sanskrit Webinar.....
All Recordings are Openly Available on YouTube

प्रथम सूचना
(12.04.2025)

Paper Presenter

Scan/Click to Register

Team Member

Scan/Click to Register

Dr. Deepika Dixit

Organizing Secretary, Sanskrit Webinar Series-06

प्रसारार्थ Flyer & Social Media

Note : आयोजन समिति के सहयोगी संस्था के रूप में जुडने हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

ई-मेल bipinkumarjha.web@gmail.com CC to jahnavisanskritjournal@gmail.com

आमन्त्रणपत्र

दिनांक 20.04.2025

अधिसेवम्

श्रीमान्……………..

संस्थाप्रमुख, विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/शोधसंस्थान

मान्यवर,

भारतीय ज्ञान परम्परा में *अष्टादश विद्यास्थान* का विशेष महत्त्व रहा है। यह समग्र ज्ञान-विन्यास केवल प्राचीन भारत की बौद्धिक संपदा ही नहीं, अपितु सांस्कृतिक और शैक्षिक पुनरुत्थान का आधार भी है। इसी सन्दर्भ में दिनांक **05 से 07 सितम्बर, 2025** को *वेबफलक (Online Platform)* के माध्यम से त्रिदिवसीय **अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी (श्रृंखला - 06)** का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विस्तृत विवरण संलग्न है। इस शोध-संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध पक्षों पर समकालीन विमर्श को बढ़ावा देना तथा विश्वभर के विद्वानों के साथ विचारों का आदान-प्रदान सुनिश्चित करना है।

इस सन्दर्भ में आप अपनें संस्था को इस संगोष्ठी में **सह-संयोजक संस्था** के रूप में प्रस्तावित कर **अपने दो प्रतिनिधियों को नामित कर सकते हैं।** प्रतिनिधियों का नामांकन https://forms.gle/AXKejkjvyJM6x7JK6 लिंक के माध्यम से किया जाना अपेक्षित है- **नामांकन हेतु लिंक:** साथ ही मेल के माध्यम से इस प्रस्ताव को 30.05.2025 तक सम्प्रेषित करने का कष्ट करें।

आपकी संस्था की सहभागिता इस श्रृंखला को विशेष बौद्धिक गरिमा प्रदान करेगी।

सादर,

Note : आयोजन समिति के सहयोगी संस्था के रूप में जुडने हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

ई-मेल bipinkumarjha.web@gmail.com CC to jahnavisanskritjournal@gmail.com

विषयानुक्रमणिका

1. प्रसारार्थ Flyer & Social Media 1
2. आमन्त्रणपत्र..2
3. संस्कृत वेबिनार परिचय एवं पृष्ठभूमि 4
4. संक्षिप्त कालानुक्रम..5
5. संस्कृत कार्यों का वैशिष्ट्य 6
6. संस्कृत कार्यों का उपक्रम..7
7. त्रिदिवसीय वेबफलकाश्रित संगोष्ठी (वेबिनार) श्रृंखला..8
8. वेबिनार श्रृंखला का वैशिष्ट्य 10
9. आयोजन के अपेक्षित लाभ..10
10. वेबिनार का उद्देश्य 10
11. वेबिनार के प्रभाग एवं तिथि 11
12. वेबिनार का विषय एवं उपविषय..11

    प्रभाग -01 : अष्टादश विद्यास्थान..11

13. अष्टादश विद्यास्थानों का समसामयिक महत्त्व..13
14. भारतीय ज्ञानपरंपरा की पुनरावृत्ति की दिशा में पादनिक्षेप..14

    प्रभाग 02 : चतुषष्ठि कला..15

    प्रभाग -03 विदेह-वैदेही (स्त्रीविमर्श)..18

15. आयोजन विवरण 18
16. लक्षित प्रतिभागी वर्ग..18
17. सत्र अनुसार प्रस्तावित विषय-वस्तु..19
18. समय तालिका 21
19. अष्टादश विद्यास्थान एवं उपविषय सूची..21
20. पंजीकरण व प्रमाणपत्र 26
21. आयोजन समिति..26

संस्कृत वेबिनार परिचय एवं पृष्ठभूमि

संस्कृतमय भविष्य की ओर एक संगठित प्रयास की गाथा: भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की अमूल्य निधि **संस्कृत भाषा** केवल एक भाषिक माध्यम नहीं, अपितु संपूर्ण भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहिका है।

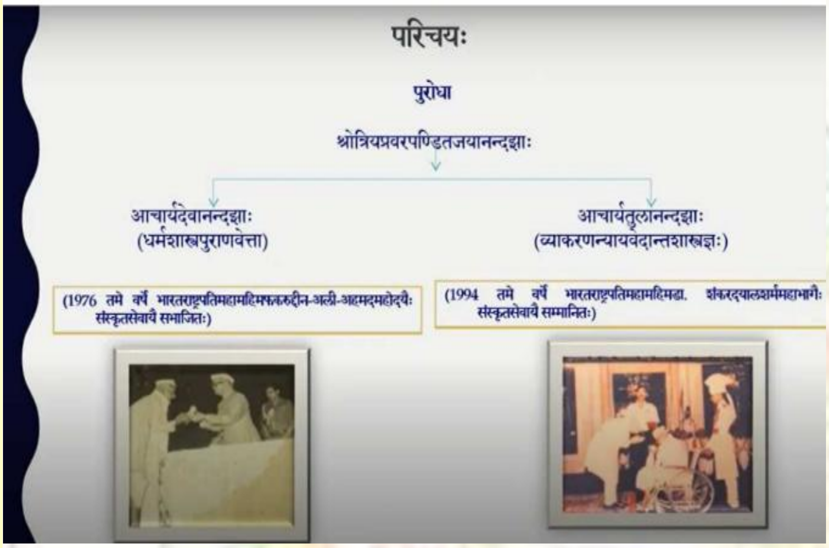

इस भाषा के माध्यम से जहाँ वैदिक ऋचाएँ गूंजी हैं, वहीं दर्शन, चिकित्सा, व्याकरण, काव्य, नाटक, योग, एवं विज्ञान की सभी शाखाएँ विकसित हुईं। आधुनिक भारत में इस गौरवशाली परम्परा को पुनर्जीवित करने हेतु अनेक व्यक्तित्व एवं संस्थानों ने सतत, समर्पित एवं नवोन्मेषी प्रयास किये हैं।

इसी क्रम में **मिथिला की पुण्यभूमि** से संबंधित दो महान संस्कृत साधक **स्व. आचार्य देवानन्द झा** एवं **स्व. आचार्य तुलानन्द झा** के अविस्मरणीय योगदान को संस्कृत जगत आज भी आदरपूर्वक स्मरण करता है। राष्ट्रपति द्वारा क्रमशः वर्ष 1976 एवं 1994 में सम्मानित इन दोनों विद्वानों ने **संस्कृतमय वातावरण निर्माण** को जीवन का उद्देश्य बनाया और भावी पीढ़ियों के लिए संस्कृत को जीवंत रखने हेतु अनेक मार्ग प्रशस्त किये।

ध्यातव्य है कि उक्त क्रम में **स्व. आचार्य भवेन्द्र झा** को भी संस्कृत की विशिष्ट सेवा हेतु 2016 में राष्ट्रपति सम्मान मिला। उक्त दोनों मनीषियों के स्मृति में स्मृतिग्रन्थ का प्रकाशन भी प्रस्तावित है। संगोष्ठी के कतिपय चयनित आलेखों का प्रकाशन भी प्रस्तावित है, इसी आशय के साथ यह श्रृंखला-06 को अग्रसारित किया जा रहा है।

संक्षिप्त कालानुक्रम

- **1978** – पं० देवानन्द झा को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हुए। उनके नेतृत्व में संस्कृत-संवाद और पारिवारिक संस्कृत-जीवन की नींव पड़ी।
- **1994** – पं० तुलानन्द झा को राष्ट्रपति द्वारा सम्मान हुए। मिथिला में संस्कृत-संस्कृति के जागरण हेतु समर्पित कार्य।
- **1988** - **"सारस्वत-निकेतनम्"** की स्थापना: यह संस्था संस्कृत साधना, शिक्षण, और संस्कृत-संस्कारों का है।
- **2000–2007** – संस्कृत के विविध **महनीय कार्यक्रमों** के निमित्त, पाठशाला-संस्कृत संगोष्ठी एवं स्थानीय आयोजनों के माध्यम से पृष्ठभूमि तैयार की गई।
- **2007** – **"संस्कृतम् ऑनलाइन"** की स्थापना, जिसके माध्यम से संस्कृत शिक्षण को

सिटी डायरी
संस्कृत में करें ब्लॉगिंग

डिजिटल रूप में आरंभ किया गया – यह उस कालखण्ड में अभूतपूर्व था। इस महान ज्ञानयज्ञ के द्वारा न केवल भारत में अपनें कीर्तिध्वज को प्रतिष्ठापित किया अपितु वैदेशिकस्तर पर भी 180 से अधिक संस्कृतानुरागियों को इस प्रकार के श्रेष्ठ कार्य निमित्त अभिप्रेरित किया।

- **2008** – **"वर्षाऽमृतम्"** नामक श्रृंखला से यूट्यूब पर विश्व के **प्रथम संस्कृत वीडियो ट्यूटोरियल** का शुभारंभ हुआ जिसका मुख्यध्येय छात्र एवं जनसामान्य तक शास्त्रज्ञानधारा, संस्कृताध्ययन के ई-अभिनव परम्परा को आवर्ष ज्ञानामृत की धारा से आप्लावित करना था।

- **2010** – **डॉ. सदानन्द झा** के मुख्यसम्पादकत्व में **विश्व की प्रथम संस्कृत ई-शोधपत्रिका** का शुभारम्भ हुआ। संस्कृतजगत में यह कार्य **युगान्तकारी और मील का पत्थर** सिद्ध हुआ, जिसने संस्कृत की शास्त्रीय एवं भारतीय ज्ञानपरम्परा को को तकनीकि माध्यम से जनसुलभ कराया। संस्कृत की शास्त्रीय एवं भारतीय ज्ञानपरम्परा की धारा तकनीकि माध्यम से निर्वाधतया अद्यावधि प्रवाहमान एवं प्रगतिमान है। ध्यातव्य है कि इस कार्य के अनन्तर संस्कृत एवं तकनीकि के प्रति न केवल विद्वत्समाज में अपितु जनसामान्य में भी इस निमित्त वैश्विक पटल पर नवनवोन्मेष चेतना का सक्रिय संचार

हुआ जिसके प्रतिफल स्वरूप विविध नूतन संस्कृत-ब्लाग्स, संस्कृतसमूह, डिजिटलाइजेशन एवं ई-शोधपत्रिकाओं का एक दौर प्रारम्भ हुआ।

- **2019** – **संस्कृत वेबिनार** के प्रकल्प का बीजारोपण हुआ। कोविड-पूर्व यह अवधारणा अपने-आप में अद्वितीय थी। बीजांकुरण के फलस्वरूप **2020** में **प्रथम संस्कृतान्तर्वीक्षा श्रृंखला** आरंभ हुई, जो **डॉ. दीपिका दीक्षित** के मुख्यसंयोजकत्व में विविध राज्यसंयोजकों एवं अन्ताराष्ट्रीय संयोजकों के सहयोग से सतत शोध, संवाद एवं नव दृष्टि प्रदान कर रही है।

- **2021**– **"शास्त्रदीपिका"** की शुरुआत हुई। यह गूढ़ शास्त्रीय विषयों को सरल भाषा के माध्यम

से सम्यक् अवबोध हेतु एक श्लाघनीय श्रृंखला के रूप में प्रतिष्ठापित हुई। इस प्रकल्प के अन्तर्गत विविध वैविध्यपूर्ण रोचक अध्यापन श्रृंखला के साथ संस्कृत प्रतियोगी प्रतिस्पर्धाओं (NTA, Higher, TGT/PGT, University Interview) का सतत आयोजन किया जाता रहा है। इस महत्कार्य का प्रमुख ध्येय संस्कृत अध्येताओं को पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा प्रदानकर जीविकोपार्जन निमित्त आधारस्तम्भ एवं प्रतिमान स्थापित करना रहा है। इस श्रेष्ठ कार्य का प्रमुख श्रेय ऐसे विद्वज्जनों को जाता है जिन्होंनें अपना बहुमूल्य समय निःस्वार्थभाव से छात्रहित समर्पित किया।

- **2024- यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् की अभिप्रेरणा** से विश्वम् रूप डिजिटल की संस्थापना की गई। जिसके माध्यम से समस्त प्रकल्पों का केन्द्रीभूत रूप है।

संस्कृत कार्यों का वैशिष्ट्य

- पारंपरिक संस्कृत ज्ञान का **नवमाध्यमों में समावेश**
- परिवार, समाज, एवं शैक्षिक क्षेत्र में **संस्कृतमय जीवन शैली** का सर्जन
- डिजिटल प्लेटफॉर्म्स (वेबसाइट, यूट्यूब, वेबिनार, ई-पत्रिका) का अभिनव उपयोग
- संस्कृतजगत को एक सूत्र में जोड़ना
- संस्कृतानुरागियों को वैश्विकपटल पर लाना
- इस तरह के अनगिनत कार्यों के लिये मार्गप्रशस्त करना
- संस्कृत को **संवाद, अभिव्यक्ति और शोध का आधुनिक माध्यम** बनाने का अद्वितीय प्रयास

संस्कृत कार्यों का उपक्रम

संस्कृत हेतु प्रचालित कार्यों का कालानुक्रम

कार्यों का उद्देश्य

2008 में इन्दौर से प्रकाशित

sankritam.ning.com की रिपोर्ट्

ई-जर्नल से जुड़ेगा शहर का संस्कृत कॉलेज-अमनेश दुबे

(स्रोत- दैनिक भास्कर- http://www.bhaskar.com/2010/03/15/100315083757_sanskrit_college.html)

संस्कृत को जनभाषा बनाने के लिए सूचना क्रांति के इस युग में विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी और अंग्रेजी में संप्रभुता को लेकर छिड़ी जंग के बीच संस्कृत को जनभाषा बनाने की बात कहां तक सफल होगी? यह तो वक्त ही बताएगा,
लेकिन आईआईटी मुंबई के स्टूडेंट बिपिन कुमार झा ने कुछ अलग ही करने की ठान रखी है। सिटी भास्कर से विशेष बातचीत में श्री झा ने कहा कि वे राजधानी के संस्कृत कॉलेज के छात्रों को अपने साथ जोड़ना चाहते हैं। संस्कृत कॉलेज भी उनका साथ देने के लिए तैयार है।
कुछ माह पहले ही संस्कृत में ब्लॉगिंग शुरू करने के बाद श्री झा ऑनलाइन जर्नल ' जाह्नवी' का भी प्रकाशन कर चुके हैं।

इस त्रैमासिक पत्रिका के प्रधान संपादक पूर्व शिक्षाविद् डॉ. सदानंद झा हैं। इसमें आस्ट्रेलिया के भाषाविद् प्रो. पोटा भी सहयोग दे रहे हैं।
इसके अलावा सहायक संपादकों एवं संरक्षकों में देश-विदेश के संकायाध्यक्षों, प्रोफेसरों व शोध छात्र शामिल हैं।

देश-विदेश के विद्वानों को जोड़ेंगे : संस्कृत कॉलेज की प्राचार्या मुक्ति मिश्रा ने इसकी सराहना करते हुए कहा कि संस्कृत के लिए इस तरह का प्रयास पूरे देश में होना चाहिए।
यह है उद्देश्य: ऑनलाइन पत्रिका के प्रकाशन के पीछे संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य है।
जाह्नवी पत्रिका में संस्कृत की वैकल्पिक भाषाओं के तौर पर अंग्रेजी और हिंदी का भी प्रयोग समझने के लिए किया गया है।
इससे नए लोगों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक प्लेटफार्म मिलेगा। देश में बहुत से ऐसे लोग हैं, जो संस्कृत के विकास के लिए कुछ करना चाहते हैं,
लेकिन चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते। ऐसे में संस्कृत ब्लॉगिंग और ई-जर्नल ने कुछ आस जगाने का काम किया है।

2010 में जाह्नवी पत्रिका जनमानस के समक्ष : दैनिक भास्कर

हिन्दुस्तान टाइम्स की दृष्टि में

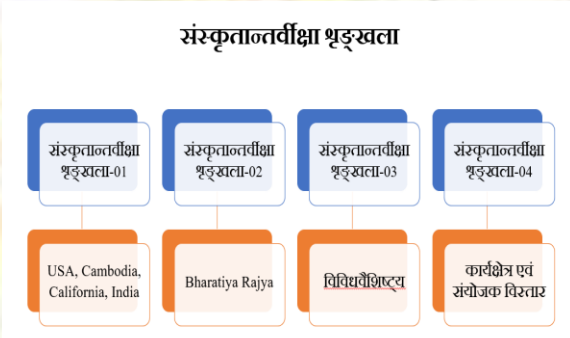

संस्कृतान्तर्वीक्षा

जाह्नवी ई शोधपत्रिका- DD News

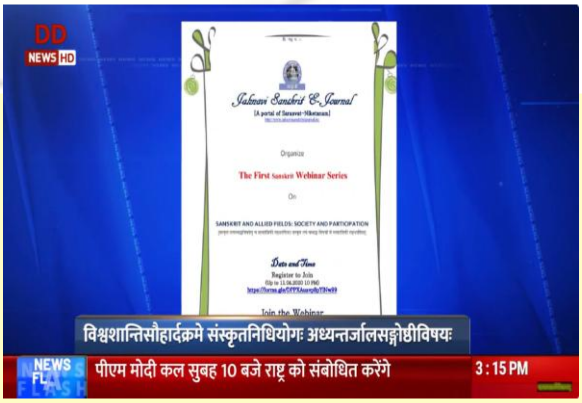

वेबिनार सिरीज @ DD National News

त्रिदिवसीय वेबफलकाश्रित संगोष्ठी (वेबिनार) शृंखला

संस्कृत भाषा के संवर्धन एवं आधुनिक तकनीकी माध्यमों के समन्वय से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु *"जाह्नवी संस्कृत ई-जर्नल"* के बैनर तले **संस्कृत जगत का प्रथम वेबिनार** दिनांक **11 अप्रैल 2020** को आरंभ किया गया। इसकी योजना एवं तैयारी का शुभारंभ **जुलाई 2019** में किया गया था।

अब तक इस शृंखला की **पाँच सफल कड़ियाँ** आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें संपूर्ण भारत सहित **8 देशों** के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। "जाह्नवी" ई-शोधपत्रिका की **प्रथम वेबिनार शृंखला की संकल्पना जुलाई 2019 में की गयी।** (11 अप्रैल 2020 से आरम्भ) **विषयवस्तु की दृष्टि से प्रथम, द्वितीय शृंखला** पूर्णतः **विविधविषयक** रही। इस शृंखला में भारतीय ज्ञान परंपरा से सम्बद्ध **वेद, शास्त्र, साहित्य, दर्शन, आयुर्वेद, योग, नाट्यशास्त्र, व्याकरण, वास्तुशास्त्र**, आदि अनेक प्रस्थानों को सम्मिलित किया गया। इससे यह प्रमाणित हुआ कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, अपितु **समग्र जीवन-दर्शन** का आधार है, जो विविध विषयों को एक सूत्र में पिरोता है। इस शृंखला में विविध विश्वविद्यालयों से जुड़े आचार्य, शोधकर्ता एवं नवाचारशील

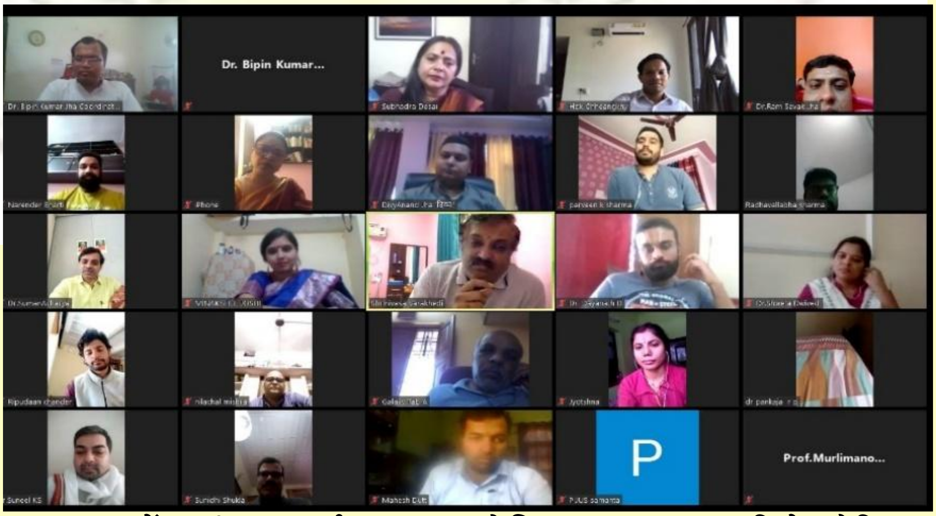

प्रतिभागियों की सहभागिता रही, जिससे यह शृंखला न केवल शास्त्रीय दृष्टिकोण से समृद्ध बनी, बल्कि समसामयिक विमर्शों से भी जुड़ी रही।

संस्कृत-जगत की ई-शोधीय परंपरा में **तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वेबिनार शृंखला** का विशेष वैशिष्ट्य यह रहा कि यह केवल संस्कृत तक सीमित न रहकर, **विविध भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के**

साथ संस्कृत के अन्तर्सम्बन्ध को द्योतित किया। इन श्रृंखलाओं में संस्कृत का तुलनात्मक अध्ययन **हिन्दी, बांग्ला, तमिळ, उर्दू, मराठी, पंजाबी, तेलुगु, असमिया** आदि भाषाओं के साथ किया गया,

वहीं दूसरी ओर **लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन, जापानी, अंग्रेज़ी, रूसी** जैसी प्रमुख वैश्विक भाषाओं से संस्कृत के ऐतिहासिक, व्याकरणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सम्बंधों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इन संवादों के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि संस्कृत भाषा न केवल भारतीय संस्कृति की जननी है, अपितु उसने विश्व की भाषाओं और चिन्तन परंपराओं को भी गहन रूप से प्रभावित किया है। इस विमर्श ने भाषिक अन्तर्सम्बन्ध के माध्यम से **सांस्कृतिक संवाद** की एक सशक्त आधारभूमि प्रस्तुत की। **600 से अधिक प्रतिभागी, 19 विश्वविद्यालयों** का सक्रिय सहयोग, **43 विविध विषयों** पर प्रस्तुति, **23 विद्वान् संसाधकों** द्वारा मार्गदर्शन, **5 कुलपति एवं 3 पूर्व कुलपति, 5000 से अधिक दर्शक** इस वेबिनार श्रृंखला में अब तक सहभागिता कर चुके हैं।

यह वेबिनार श्रृंखला न केवल शैक्षिक विमर्श का माध्यम बनी है, बल्कि **भारतीय ज्ञानपरम्परा की संवाहक** के रूप में भी अपनी महती भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से संस्कृत की समृद्ध परंपरा, दर्शनों, विज्ञान, कला, साहित्य एवं संस्कृति के विविध आयामों को वैश्विक पटल पर पुनर्स्थापित करने का अभिनव प्रयास किया गया है।

इस वेबिनार श्रृंखला के **प्रायोजक के रूप में भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालय एवं प्रतिष्ठित संस्थाएं** रही हैं, जिन्होंने इसे शैक्षणिक दृष्टिकोण से समृद्ध बनाया। इस अभिनव प्रयास ने यह प्रमाणित किया है कि संस्कृत भाषा आज भी समसामयिक है और डिजिटल माध्यमों के सहयोग से इसकी प्रासंगिकता एवं पहुँच को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया जा सकता है।

वेबिनार श्रृंखला का वैशिष्ट्य

गुणवत्तापूर्ण अकादमिक प्रस्तुति – उच्च स्तर के शोध और वक्तव्य

समस्त सत्रों की रिकॉर्डिंग उपलब्ध – भविष्य के संदर्भ हेतु स्थायी संकलन

सुसज्जित वेबसाइट – सभी सामग्री, कार्यक्रम, ग्रंथ, लिंक, एवं शोध एक स्थान पर संगृहीत

वैश्विक सहभागिता – विभिन्न देशों के प्रतिभागियों, संसाधकों व विश्वविद्यालयों की भागीदारी

सम्पादित शोधसार (Abstracts) का प्रकाशन – शोधप्रवृत्तियों के दस्तावेज़ीकरण की दिशा में अभिनव पहल।

सम्पादित ग्रंथों का प्रकाशन – प्रस्तुत विषयों पर आधारित संकलनों का विद्वत्तापूर्ण संपादन एवं स्मृति ग्रन्थ के रूप में प्रकाशन

जीरो बजट में भव्य कार्यक्रम – सीमित संसाधनों में तकनीक एवं सहयोग से संभव अद्वितीय आयोजन

आयोजन के अपेक्षित लाभ

- विद्यार्थियों में कौशल विकास की समझ को विकसित करना।
- भारतीय संस्कृत साहित्य के माध्यम से शिक्षा को व्यवसायिक (रोजगारपरक)स्वरूप प्रदान करना।
- शारीरिक,मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक चेतना तथा स्वतंत्रता प्रदान करना।
- सर्वजनानुगुण उत्तम स्वास्थ्य के प्रति योगानुरूप जागरूक करना
- पारम्परिक भारतीय ज्ञान-विज्ञान की गूढ़ समझ
- वेद-शास्त्रों के विविध पक्षों का तुलनात्मक दृष्टिकोण
- विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों हेतु शोध की नवीन दिशाएँ
- भारत की सांस्कृतिक आत्मा से पुनः जुड़ाव

वेबिनार का उद्देश्य

- अष्टादश विद्याओं का परिचय एवं ऐतिहासिक संदर्भ।
- प्रत्येक विद्यास्थान की आज के परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता का विवेचन।
- शिक्षकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों हेतु भारतीय ज्ञान-वृत्तियों का जागरण।
- भारतीय शिक्षा दर्शन की पुनर्परिभाषा में सहयोग।

वेबफलकाश्रित संगोष्ठी (वेबिनार) शृंखला-06

अष्टादश विद्यास्थान एवं चतुषष्ठिकला : भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार

भारतीय परम्परा में ज्ञान को दिव्यतुल्य मानते हुए उसे विविध रूपों में वर्गीकृत किया गया है। उनमें से **"अष्टादश विद्यास्थान"** अर्थात् **18 विद्याएँ** ज्ञान की विविध शाखाओं का समन्वित रूप हैं, जो केवल धार्मिक या दार्शनिक न होकर सामाजिक, व्यवहारिक और नैतिक जीवन का मार्गदर्शन भी करती हैं। वर्तमान समय में इन विद्याओं का अध्ययन, उनकी प्रासंगिकता तथा व्याख्या अत्यन्त आवश्यक है। इस निमित्त एक **अन्ताराष्ट्रीय वेबिनार** का आयोजन प्रस्तावित है, जिसमें विद्वत्जन इन विद्याओं की सांस्कृतिक, शैक्षिक व व्यावहारिक महत्ता पर प्रकाश डालेंगे। है। संगोष्ठी के कतिपय चयनित आलेखों का स्मृतिग्रन्थ के रूप में प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

वेबिनार के प्रभाग एवं तिथि

क्रम	प्रभाग	उत्तरदायित्व	समेकित उत्तरदायित्व	आयोजन तिथि
1	अष्टादश विद्यास्थान	प्रो मखलेश उपाध्याय	डा दीपिका दीक्षित डा धनंजय कुमार झा	5-8 Sep, 25
2	चतुषष्ठिकला	डा धनंजय वासुदेव द्विवदी		09-10 Sep, 25
3	स्त्रीविमर्श	प्रो गीता शुक्ला डा प्रिया रानी		11 Sep, 25

वेबिनार का विषय एवं उपविषय

अष्टादश विद्यास्थान : भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार

प्रभाग -01 : अष्टादश विद्यास्थान

भारतीय ज्ञानपरंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने के लिए अष्टादश विद्यास्थानों की संकल्पना विकसित की गई थी। ये अठारह विद्याएँ ज्ञान के लगभग सभी प्रमुख पहलुओं को समाहित करती रही हैं और एक समग्र शिक्षा प्रणाली का आधारभूत रहीं हैं। वर्तमान समय में, जब हम भारतीय ज्ञानपरंपरा को पुनर्जीवित करने और

उसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने की बात करते हैं, तो इन अष्टादश विद्यास्थानों का अध्ययन और उनका समसामयिक महत्त्व समझना अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसका उद्देश्य इन विद्यास्थानों के मूल स्वरूप से अवगत होते हुए, आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता और पुनरावृत्ति की संभावनाओं पर विचार करना है। विभिन्न प्राचीन ग्रंथों में अष्टादश विद्यास्थानों की सूची में कुछ भिन्नताएँ मिलती हैं, लेकिन सामान्यतः निम्नलिखित विद्याओं को इनमें सम्मिलित किया जाता है:

1. **चार वेद:** ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद - ये भारतीय संस्कृति और धर्म के मूल आधार हैं, जिनमें ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान संबंधी विस्तृत ज्ञान समाहित है।
2. **छः वेदांग:** शिक्षा (ध्वनि विज्ञान), कल्प (अनुष्ठान), व्याकरण (भाषा विज्ञान), निरुक्त (व्युत्पत्ति शास्त्र), छंद (काव्यशास्त्र), और ज्योतिष (खगोल विज्ञान) - ये वेदों के सही अर्थ और प्रयोग को समझने में सहायक होते हैं।
3. **मीमांसा:** वेदों के कर्मकांडीय भाग की व्याख्या और दार्शनिक विवेचन।
4. **न्याय:** तर्कशास्त्र और प्रमाण मीमांसा का अध्ययन, जो ज्ञान प्राप्त करने की विधि और सत्यता की जाँच पर केंद्रित है।
5. **पुराण:** प्राचीन इतिहास, कथाएँ, सृष्टि विज्ञान, और विभिन्न देवी-देवताओं की महिमा का वर्णन।
6. **धर्मशास्त्र:** सामाजिक नियम, कर्तव्य, और नैतिक आचरण से संबंधित सिद्धांत।
7. **अर्थशास्त्र:** शासन, राजनीति, और आर्थिक व्यवस्था से संबंधित ज्ञान।
8. **आयुर्वेद:** चिकित्सा विज्ञान और स्वस्थ जीवन जीने के सिद्धांतों का अध्ययन।
9. **धनुर्वेद:** युद्ध कला और शस्त्र विद्या का ज्ञान।
10. **गांधर्ववेद:** संगीत, नृत्य, और कलाओं का अध्ययन।

कुछ अन्य सूचियों में इतिहास, शिल्पशास्त्र, और विभिन्न दर्शनों (जैसे सांख्य, योग, वैशेषिक, बौद्ध, जैन) को भी अष्टादश विद्यास्थानों में सम्मिलित किया जाता है।

अष्टादश विद्यास्थानों का समसामयिक महत्त्व

आज के युग में, जब हम ज्ञान के विस्फोट और विशिष्टता के दौर से गुजर रहे हैं, अष्टादश विद्यास्थानों का अध्ययन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हो जाता है:

1. **समग्र दृष्टिकोण का विकास:** अष्टादश विद्यास्थान ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को एक साथ जोड़कर देखने का दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में विशिष्टता पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। इन विद्याओं का अध्ययन छात्रों को विभिन्न विषयों के बीच अंतर्संबंधों को समझने और एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद कर सकता है।
2. **भारतीय ज्ञानपरंपरा की गहरी समझ:** ये विद्यास्थान भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, और कलाओं की नींव हैं। इनका अध्ययन छात्रों को अपनी जड़ों से जुड़ने और भारतीय ज्ञानपरंपरा की गहराई को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह आत्म-परिचिति और सांस्कृतिक गौरव की भावना को बढ़ावा दे सकता है।
3. **आधुनिक चुनौतियों का समाधान:** प्राचीन भारतीय ज्ञान में कई आधुनिक समस्याओं के समाधान के सूत्र निगूढ हैं। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद और योग आज वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इसी प्रकार, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र में नैतिक और सतत विकास के सिद्धांत खोजे जा सकते हैं।
4. **तर्क और विश्लेषण क्षमता का विकास:** न्याय और मीमांसा जैसी विद्याएँ तर्क, विश्लेषण, और आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। ये कौशल आज के जटिल और सूचना-समृद्ध युग में अत्यंत आवश्यक हैं।
5. **भाषा और संस्कृति का संरक्षण:** व्याकरण, निरुक्त, और छंद आदि वेदांग, भाषा के महत्त्व और संरचना को समझने में मदद करते हैं। पुराण और इतिहास हमारी सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने का माध्यम हैं। इन समस्त विद्याओं का अध्ययन, भाषा और संस्कृति के संरक्षण में योगदान दे सकता है।
6. **कला और सौंदर्यबोध का विकास:** गांधर्ववेद, कला और सौंदर्यशास्त्र के महत्त्व को उजागर करता है। यह छात्रों में रचनात्मकता, संवेदनशीलता, और कलात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने में सहायक हो सकता है।
7. **विज्ञान और प्रौद्योगिकी का आधार:** ज्योतिष और शिल्पशास्त्र जैसे विद्यास्थान प्राचीन भारत में खगोल विज्ञान, गणित, वास्तुकला, और अभियान्त्रिकी विकास के प्रमाण हैं। इनका अध्ययन आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ऐतिहासिक विकास को समझने में मदद कर सकता है।

भारतीय ज्ञानपरंपरा की पुनरावृत्ति की दिशा में पादनिक्षेप

अष्टादश विद्यास्थानों का समसामयिक महत्त्व स्वीकार करते हुए, भारतीय ज्ञानपरंपरा की पुनरावृत्ति की दिशा में निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

1. **शैक्षणिक पाठ्यक्रम में समावेश:** इन विद्याओं के मूल सिद्धांतों और अवधारणाओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर उपयुक्त रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसके लिए विशेष पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री विकसित की जा सकती है।
2. **शोध और अध्ययन को प्रोत्साहन:** विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में इन विद्याओं के विभिन्न पहलुओं पर गहन शोध को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आधुनिक वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके प्राचीन ज्ञान की प्रासंगिकता को स्थापित किया जा सकता है।
3. **अंत:विषयक दृष्टिकोण:** इन विद्याओं का अध्ययन अन्य आधुनिक विषयों के साथ अंतःविषयक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ जोड़कर समग्र स्वास्थ्य सेवा प्रणाली विकसित की जा सकती है।
4. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करके इन विद्याओं के ज्ञान को व्यापक रूप से प्रसारित किया जा सकता है। वर्चुअल कक्षाएँ, ई-पुस्तकालय, और इंटरैक्टिव लर्निंग मॉड्यूल विकसित किए जा सकते हैं।
5. **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को भारतीय ज्ञानपरंपरा और अष्टादश विद्यास्थानों के बारे में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे छात्रों को प्रभावी ढंग से इस ज्ञान से परिचित करा सकें।
6. **समुदाय आधारित पहल:** स्थानीय समुदायों और पारंपरिक ज्ञान धारकों को सम्मिलित करके इन विद्याओं के व्यावहारिक पहलुओं को बढ़ावा दिया जा सकता है।

अष्टादश विद्यास्थान भारतीय ज्ञानपरंपरा के आधार स्तंभ हैं। वर्तमान समय में, जब हम एक ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण की ओर अग्रसर हैं, इन विद्याओं का अध्ययन और उनका समसामयिक महत्त्व समझना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह न केवल हमें अपनी समृद्ध विरासत से जोड़ेगा बल्कि आधुनिक चुनौतियों का समाधान खोजने और एक समग्र और संतुलित शिक्षा प्रणाली विकसित करने में भी सहायक होगा। भारतीय ज्ञानपरंपरा की पुनरावृत्ति की दिशा में अष्टादश विद्यास्थानों का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है, जिससे हम प्राचीन ज्ञान के प्रकाश में एक उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रभाग 02 : चतुषष्ठि कला

चतुषष्ठि कलाएँ प्राचीन भारतीय संस्कृति में जीवन-कौशल, कला, विज्ञान, और सौंदर्यबोध की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियाँ मानी जाती थीं। विशेषतः ये कामशास्त्र, नाट्यशास्त्र, तथा अन्य ग्रन्थों में उल्लिखित हैं, जैसे वात्स्यायन के *कामसूत्र* में।

चौषट् कलाः (64 Kalās) एवं संक्षिप्त परिचयः

क्रमांक	कला का नाम	संक्षिप्त परिचय
1	गीतम्	गायनकला (संगीत)
2	वाद्यम्	वाद्ययंत्र बजाने की कला
3	नृत्यम्	नृत्य करने की कला
4	नाट्यम्	अभिनय व रंगमंच
5	आलेख्यं	चित्रकला (पेंटिंग)
6	विषयेषु आलेखनम्	दीवारों या धरातल पर सजावटी चित्र
7	तण्डुलकुसुमबलीविकारः	चावल व पुष्पों से अलंकरण
8	पुष्पशयनविकल्पः	पुष्पों से शय्या सजाने की कला
9	दासवाचनम्	कठपुतली या दासियों से संवाद कला
10	नाट्यायिकायोजनम्	नाटक में पात्रों की व्यवस्था
11	काव्यसमास	काव्य रचना की संक्षिप्त शैली
12	चितिवाचनम्	चित्र देखकर कथा कहना
13	अब्धबन्धः	जल में पुष्पों से अलंकरण
14	कुवलयग्रहणम्	फल-फूलों की पहचान
15	चित्रकथावाचनम्	चित्रों द्वारा कथा-वर्णन
16	माल्यग्रहणविन्यासः	मालाओं का निर्माण व सज्जा
17	केशविन्यासः	बालों को सजाने की कला
18	वस्त्रगोपनम्	वस्त्र संक्षेपण या सज्जा की विधि
19	अंगरागः	शरीर को सजाने की विधियाँ

क्रमांक	कला का नाम	संक्षिप्त परिचय
20	गन्धयुक्तिकम्	इत्र, सुगन्धियों का प्रयोग
21	भूषणयोजनम्	आभूषणों की सज्जा
22	आहाररचनम्	व्यंजन सज्जा एवं रचनात्मकता
23	कक्षविन्यासः	गृह सज्जा
24	पुष्पशकटिका	पुष्पों से छोटी गाड़ियों की रचना
25	नाट्यप्रयोगः	रंगमंच पर नाट्य की प्रस्तुति
26	कविचातुर्यम्	काव्य लेखन में कुशलता
27	वणिक्चातुर्यम्	व्यापार-कौशल
28	विद्यायोगः	विद्याओं का अध्ययन
29	गूढपश्यनम्	गुप्त संकेतों को देखना
30	यंत्रमात्रा	यांत्रिक युक्तियों का ज्ञान
31	धारणी	स्मरण शक्ति का प्रयोग
32	समाधिः	ध्यान की उच्च अवस्था
33	मनोज्ञानम्	मनोविज्ञान का ज्ञान
34	कलाशास्त्रम्	विविध कलाओं का शास्त्र
35	क्रिडाकौशलम्	खेलों में दक्षता
36	वास्तुशास्त्रम्	भवन निर्माण कला
37	विन्यासः	स्थापत्य का अलंकरण
38	शिल्पम्	मूर्तिकला व निर्माण
39	यंत्रयोजनम्	यंत्रों की रचना
40	ललितकलाविद्या	सुन्दर कलात्मक कार्य
41	तर्कविचारः	तर्क करने की कला
42	गद्यपद्यरचना	गद्य व पद्य की सृजनकला
43	धारणामन्त्रविद्या	मन्त्रों को धारण करने की विद्या
44	विविधानामवस्थायोगः	विभिन्न स्थितियों में सामंजस्य

क्रमांक	कला का नाम	संक्षिप्त परिचय
45	वायुविकारम्	वायु द्वारा रचना (उड़ती सज्जा)
46	जलविकारकला	जल की सतह पर सज्जा
47	चित्रयन्त्रकला	चित्र बनाने की युक्तियाँ
48	तैलचित्रम्	तैल रंगों से चित्र बनाना
49	सूचिवाक्यकर्म	सुई व धागे का कार्य (कढ़ाई)
50	सूत्रकर्म	सूत्रों से अलंकरण
51	कपासरचनम्	सूती वस्त्र निर्माण
52	मृद्भाण्डविधानम्	मिट्टी के पात्र बनाना
53	यन्त्रविन्यासः	मशीनों का निर्माण
54	कण्ठसूत्ररचना	हार इत्यादि गहनों की डिजाइन
55	वलयकर्म	कंगन बनाना
56	रत्नपरिज्ञानम्	रत्नों की पहचान व परख
57	धातुविद्या	धातुओं का ज्ञान व कार्य
58	रसायनकर्म	औषध निर्माण
59	व्रणरोपणविद्या	घाव भरने की कला
60	वस्त्रचौर्यरक्षणम्	वस्त्र चोरी से सुरक्षा
61	रूपान्तरविद्या	भेष बदलने की कला
62	गणकविद्या	गणना की विद्या
63	अश्वविद्या	घुड़सवारी व अश्वशास्त्र
64	सैनिकविद्या	युद्धकला व शस्त्रविद्या

चौंसठ कलाओं (64 Kalās) पर आधारित शोधपत्रों/शोधप्रविष्टियों हेतु संभावित **शोध शीर्षकों की सूची सम्बद्ध निबन्धनपत्रक मेम्** प्रस्तुत की गई है। ये शीर्षक पारम्परिक अध्ययन, तुलनात्मक विमर्श, समकालीन प्रासंगिकता, ललितकला, समाजशास्त्र, शिक्षा, तथा स्त्री-अधिकार जैसे विविध दृष्टिकोणों से तैयार किए गए हैं।

प्रभाग -03 विदेह-वैदेही (स्त्रीविमर्श)

उक्त दोनों प्रभागीय विषयवस्तुपर ही प्रभाग-03 अवलम्बित है। **अष्टादश विद्यास्थान (18 विद्यास्थान)** एवं **स्त्री-विमर्श (Feminist Discourse)** के समन्वय पर आधारित कुछ सारगर्भित **शोध-शीर्षकों की सूची** निबन्धनपत्र मे दी गयी है। ये शीर्षक प्राचीन भारतीय शिक्षा-परंपरा में स्त्री की भूमिका, स्त्री-अधिकार, ज्ञान-संरचना में स्त्रियों की भागीदारी, तथा समकालीन पुनर्पाठ आदि को समेटते हैं। इसी प्रकार **चौंसठ कलाओं पर आधारित स्त्री-विमर्श (Feminist Discourse)** को ध्यान में रखकर तैयार किए गए **शोध-शीर्षकों** की सूची निबन्धनपत्र मे दी गयी है। ये शीर्षक पारम्परिक स्त्री-भूमिका, सांस्कृतिक चेतना, आधुनिक स्त्री-अधिकार, कौशल विकास, शिक्षा, और सामाजिक संरचना के विविध पक्षों को स्पर्श करते हैं।

आयोजन विवरण

- **तिथि:** 05-11 Sep, 2025
- **समय:** टाइम जोनवाइज सूचना दी जाएगी
- **माध्यम:** Google Meet
- **भाषा:** हिन्दी / संस्कृत / अंग्रेज़ी
- **प्रवेश:** निःशुल्क (पूर्व-पंजीकरण अनिवार्य)

Scan/Click to Register

https://forms.gle/AXKejkjvyJM6x7JK6

लक्षित प्रतिभागी वर्ग

- संस्कृत / दर्शन / इतिहास / संस्कृति के विद्यार्थी एवं शोधार्थी
- शैक्षिक संस्थानों के शिक्षकगण
- भारतीय परम्परा में रुचि रखने वाले सामान्य नागरिक
- साहित्य, नीति व धर्म के अध्येता

सत्र अनुसार प्रस्तावित विषय-वस्तु

सत्र	विषय	वक्ता/आलेख अपेक्षित
	DAY-01	
	उद्घाटनसत्र	
	समय............	
	व्याख्यानसत्र	
1	वेद, वेदांग एवं उपवेद: ज्ञान की मूल धारा	**सत्र-संचालन-**
2	धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र एवं मीमांसा: नीति और तर्क का समन्वय	**सत्र-संचालन-**
3	विद्यास्थानों का ऐतिहासिक विकास एवं शैक्षिक परम्परा	**सत्र-संचालन-**
	DAY-02	
4	अष्टादश विद्यास्थान और प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति	**सत्र-संचालन-**
5	अष्टादश विद्यास्थान एवं समकालीन शैक्षिक पाठ्यक्रम: एक तुलनात्मक दृष्टि	**सत्र-संचालन-**
6	विद्यास्थान एवं भारतीय विश्वविद्यालयों की परंपरा (नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी आदि)	**सत्र-संचालन-**
	DAY-03	
7	विद्यास्थानों में भाषिक एवं गणितीय ज्ञान: शिक्षा में समन्वय की दृष्टि	**सत्र-संचालन-**
8	सांस्कृतिक सत्र: नाट्यविद्या, चित्रकला, गायन, वास्तु आदि विद्याओं की प्रदर्शनात्मक झलकियाँ	**सत्र-संचालन-**
9	अष्टादश विद्यास्थान: परम्परा का पुनर्पाठ	**सत्र-संचालन-**
	DAY-04	
10	भारतीय विद्यास्थानों की प्रासंगिकता: नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में1	**सत्र-संचालन-**
11	लोकज्ञान, शिल्प, एवं कुटीर उद्योग: विद्यास्थानों का आधुनिक अर्थशास्त्रीय पुनर्पाठ	**सत्र-संचालन-**

सत्र	विषय	वक्ता/आलेख अपेक्षित
12	अष्टादश विद्यास्थान: भारतीयता, आधुनिकता और वैश्विक संवाद	**सत्र-संचालन-**
	DAY-05	
13	भारतीय संस्कृति में चतुषष्टि कलाओं की अवधारणा	**सत्र-संचालन-**
14	कामशास्त्र, नाट्यशास्त्र एवं अन्य ग्रन्थों में चतुष्षष्टिकला का निरूपण	**सत्र-संचालन-**
15	लोककला, ग्रामीण स्त्रियाँ और पारंपरिक कलाएँ: आत्मनिर्भर भारत की नींव	**सत्र-संचालन-**
	DAY-06	
16	चौंसठ कलाएँ और भारतीय ललितकला परंपरा: चित्र, संगीत, नृत्य का समन्वय	**सत्र-संचालन-**
17	चौंसठ कलाएँ : ऐतिहासिक अनुभव व समकालीन चुनौतियाँ	**सत्र-संचालन-**
18	चतुष्षष्टिकला में से चयनित कलाओं की जीवंत प्रस्तुति के आयाम	**सत्र-संचालन-**
	DAY-07	
19	अष्टादश विद्यास्थान: वैदिक से उत्तरवैदिक युग तक स्त्री की सहभागिता”	**सत्र-संचालन-**
20	कौशल आधारित शिक्षा: प्राचीन विद्यास्थानों में स्त्री के लिए अवसर और सीमाएँ	**सत्र-संचालन-**
21	शास्त्रीय नाट्य, नृत्य, वाद्यकला, चित्रकला आदि में स्त्री-संवेदना	**सत्र-संचालन-**

जिज्ञासासत्र

सम्पूर्ति सत्र

समय तालिका

क्रम	उद्घोषणा	कार्य	तिथि
1	प्रथम उद्घोषणा	सामान्य सूचना सहित वेबिनार की घोषणा	12.04.2025
2	द्वितीय उद्घोषणा	टीम एवं सहयोगी संस्था आदि तथा चयनित शोधसार घोषणा	14.06.2025
3	तृतीय उद्घोषणा	चयनित शोधपत्र की घोषणा	13.08.2025
4	निबन्धन की अन्तिम तिथि	प्रपत्र पूरण	02.06.2025

अष्टादश विद्यास्थान एवं उपविषय सूची

प्रभाग 01

🕉️ १–४: चार वेदाः

वेद	उपविषय
१. ऋग्वेदः	- ऋचाओं का स्वरूप एवं देवता-विज्ञान- ऋषि व मण्डल व्यवस्था- सूक्तों का सांस्कृतिक व दार्शनिक अध्ययन
२. यजुर्वेदः	- यज्ञीय विधियाँ- मंत्र व प्रक्रिया में समन्वय- कृष्ण व शुक्ल यजुर्वेद में भेद
३. सामवेदः	- ऋचाओं का गायन रूप- सामगान शैली व राग परंपरा- भारतीय संगीत की जड़ें
४. अथर्ववेदः	- लौकिक व तांत्रिक विषय- चिकित्सा, सामाजिक विधियाँ- उपवेदों से संबंध

🔱 ५–१०: षड्वेदाङ्गानि (षडङ्गाः)

वेदाङ्ग	उपविषय
५. शिक्षा (Phonetics)	- वर्णों की उच्चारण प्रणाली- स्वर व व्यंजन की स्पष्टता- पाणिनीय शिक्षा ग्रन्थ
६. कल्प (Rituals)	- श्रौत, गृह्य, धर्मसूत्रों का विवेचन- यज्ञ-विधि और नियम- समाज में व्यवहारिक स्वरूप
७. व्याकरणम् (Grammar)	- पाणिनीय अष्टाध्यायी का महत्त्व- धातु-पद-विभक्ति विज्ञान- भाषा की शुद्धता
८. निरुक्तम् (Etymology)	- शब्दों की व्युत्पत्ति- यास्क की निरुक्त परंपरा- वैदिक शब्दार्थ
९. छन्दः (Prosody)	- वर्णिक व मात्रिक छन्द- छन्दों का सांगीतिक पक्ष- काव्य की लयात्मकता

वेदाङ्ग	उपविषय
१०. ज्योतिषम् (Astronomy/Astrology)	- कालगणना, पंचांग, ग्रह-नक्षत्र- वैदिक ज्योतिष का विज्ञान- मुहूर्त निर्णय

🌿 ११–१४: चार उपवेदाः

उपवेद	उपविषय
११. आयुर्वेदः	- शरीर, मन व स्वास्थ्य का विज्ञान- चरक-सुश्रुत परंपरा- षड्भाव, त्रिदोष सिद्धान्त
१२. धनुर्वेदः	- अस्त्र-शस्त्र विद्या- नीति, युद्धनीति, प्रशिक्षण पद्धति- शौर्य व रक्षण की परंपरा
१३. गान्धर्ववेदः	- संगीत, नृत्य, नाट्य का विज्ञान- भरतमुनि का नाट्यशास्त्र- रस व भाव की परंपरा
१४. अर्थशास्त्रम्	- चाणक्य नीतिशास्त्र- शासन, अर्थनीति, कर प्रणाली- राज्य, दण्डनीति व समृद्धि सिद्धान्त

📖 १५–१८: चार उपाङ्ग /शास्त्र

उपाङ्ग / दर्शन	उपविषय
१५. मीमांसा (पूर्वमीमांसा)	- यज्ञ व वेदवाक्यों की व्याख्या पद्धति- अपूर्व, विधि-नियम का विवेचन- जैमिनि सूत्र
१६. न्याय (तर्कशास्त्र)	- प्रमाण, अनुमान, हेत्वाभास- गौतम न्यायसूत्र- तर्क एवं विवेक की परंपरा
१७. पुराणानि	- 18 महापुराणों की कथा, तत्त्वज्ञान- स्मृति परंपरा में स्थान- सांस्कृतिक इतिहास
१८. धर्मशास्त्राणि	- मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि- वर्णाश्रम, कर्तव्य, नीतिशास्त्र- सामाजिक आचार संहिता

प्रभाग 02

1. भारतीय चौंसठ कलाएँ: एक सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अनुशीलन
2. कामसूत्र में वर्णित चौंसठ कलाओं का सामाजिक सन्दर्भ
3. प्राचीन भारतीय स्त्री-शिक्षा में चौंसठ कलाओं की भूमिका
4. चौंसठ कलाएँ एवं भारतीय ललितकला परम्परा: एक तुलनात्मक अध्ययन
5. चौंसठ कलाओं का शिक्षाशास्त्रीय मूल्यांकन एवं आधुनिक पुनर्परिभाषा
6. यंत्रविद्या, वास्तुशास्त्र एवं शिल्पकला: चौंसठ कलाओं में विज्ञान का समावेश

7. चौंसठ कलाएँ और समकालीन कौशल विकास कार्यक्रम: क्या भारत लौट सकता है अपनी परंपरा की ओर?
8. रामायण-महाभारत में चौंसठ कलाओं की छायाएँ
9. भारतीय नाट्यशास्त्र एवं चौंसठ कलाएँ: अभिनय-कला का गूढ़ तंत्र
10. चौंसठ कलाएँ एवं स्त्री-स्वावलम्बन: ऐतिहासिक दृष्टिकोण
11. कलाओं के माध्यम से भारतीय सौन्दर्यबोध का विकास: एक अध्ययन
12. चौंसठ कलाएँ एवं भारतीय संगीत परम्परा का अन्तर्सम्बन्ध
13. प्राचीन भारत में गृहसज्जा, भोजन एवं वस्त्रकला: चौंसठ कलाओं के आलोक में
14. अर्थशास्त्र एवं चौंसठ कलाएँ: आर्थिक दृष्टिकोण से विश्लेषण
15. अष्टादश विद्यास्थानों में चौंसठ कलाओं की छवि
16. भारतीय परम्परा में चौंसठ कलाएँ और आधुनिक ललित कला विश्वविद्यालयों का पाठ्यक्रम: एक समीक्षात्मक अध्ययन
17. योग, ध्यान एवं समाधि: चौंसठ कलाओं में आत्मिक साधना की उपस्थिति
18. संस्कृत साहित्य में चौंसठ कलाओं का उल्लेख एवं प्रस्तुति
19. चौंसठ कलाएँ और आज की नारी: संस्कृति व समकालीनता के बीच सेतु
20. अलंकृति से आत्मविकास तक: चौंसठ कलाओं की शिक्षाविधि का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन

प्रभाग 03

1. चौंसठ कलाएँ: प्राचीन भारतीय स्त्री-शिक्षा का आधार
2. स्त्री की आत्मनिर्भरता में चौंसठ कलाओं की भूमिका
3. चौंसठ कलाएँ और स्त्री सशक्तिकरण: परम्परा से समकालीनता तक
4. कामसूत्र की चौंसठ कलाएँ: स्त्री-दृष्टिकोण से पुनर्पाठ
5. भारतीय गृहिणी और चौंसठ कलाएँ: अदृश्य श्रम की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति
6. चौंसठ कलाएँ और स्त्री सौंदर्यबोध: सांस्कृतिक अध्ययन
7. स्त्री-विलास या स्त्री-विकास? चौंसठ कलाओं की वैकल्पिक व्याख्या
8. स्त्री के कौशल विकास में पारम्परिक कलाओं की भूमिका
9. पुराणों और काव्य साहित्य में कलासंपन्न स्त्री की छवि
10. संस्कृत साहित्य की नायिकाओं में चौंसठ कलाओं की प्रस्तुति

11.नारी और कलाएं: पारंपरिक स्त्री शिक्षा बनाम आधुनिक करियर
12.चौंसठ कलाएं और स्त्री की सामाजिक स्थिति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
13.स्त्री जीवन की सौंदर्य चेतना में चौंसठ कलाओं का योगदान
14.स्त्री दृष्टिकोण से नृत्य, गायन, और चित्रकला का विश्लेषण
15.वास्तु, शिल्प और गृह-सज्जा: चौंसठ कलाओं में स्त्री की भूमिका
16.स्त्री की अभिव्यक्ति के साधन: कलाओं के माध्यम से
17.पारंपरिक स्त्रियों की ललितकला दक्षता: एक आलोचनात्मक अध्ययन
18.कलाओं में लुप्त होती स्त्री पहचान: आधुनिक समाज का संकट
19.कौशल विकास योजनाओं में चौंसठ कलाओं की पुनर्स्थापना और स्त्री-केन्द्रित नीति
20.राजमहलों की स्त्रियाँ और कलासंस्कार: इतिहास के पृष्ठों से
21.नारी आत्मनिर्भरता में रचनात्मक कलाओं की सम्भावनाएँ
22.प्राचीन भारतीय विवाह प्रणाली में कलासंपन्न वधू की अवधारणा
23.स्त्री, सौंदर्य और कलाएं: समाज की दृष्टि या आत्म-अभिव्यक्ति?
24.चौंसठ कलाओं में नारी की भूमिका: एक सांस्कृतिक पुनर्पाठ
25.लोककला और स्त्रियाँ: परम्परा से समकालीन विमर्श तक
26.भारतीय बालिकाओं हेतु कौशल-निर्माण का पारंपरिक ढांचा: एक पुनर्विचार
27.स्त्री-अधिकार और चौंसठ कलाएं: क्या परंपरा में शक्ति निहित है?
28.कलात्मक श्रम में स्त्री की गिनती: अदृश्य श्रम बनाम सांस्कृतिक पूँजी
29.आधुनिक स्त्री और लुप्त होती पारंपरिक कलाएं
30.स्त्री और कलाओं का सम्बन्ध: उपेक्षा, आदर, या उपयोग?
31.चौंसठ कलाओं में लैंगिक भेदभाव का पाठ
32.भारतीय स्त्री-शिक्षा में कलाओं का स्थान: अतीत और वर्तमान
33.चित्रकला एवं नाट्यकला में स्त्री की सांस्कृतिक भूमिका
34.संस्कृत साहित्य में विदुषी स्त्रियाँ और कलाशक्ति
35.भारतीय समाज में स्त्री-कला को पुनःस्थापित करने की आवश्यकता
36.चौंसठ कलाएं और स्त्री का शारीरिक-अभिव्यक्तिक आत्मविश्वास
37.गृहकला से करियर तक: स्त्री के लिए पारंपरिक कलाओं की नई भूमिका
38.प्राचीन भारत की शिक्षित नारी: एक कलासंपन्न व्यक्तित्व
39.कला, स्त्री और धर्म: कलाओं में स्त्री की धार्मिक स्थिति
40.स्त्रीत्व की व्याख्या चौंसठ कलाओं के आलोक में

41.चौंसठ कलाएं और स्त्री-स्वर: कविता, रंग और आंदोलन

42.कलाएं और स्त्री की देह: सामाजिक दृष्टिकोण की आलोचना

43.स्त्री-उद्योगों और कुटीर शिल्प में चौंसठ कलाओं का योगदान

44.चौंसठ कलाएं और मातृत्व: एक अंतर्सम्बन्ध

45.स्त्री के आत्माभिव्यक्ति की साधनरूप कलाएं

46.गुप्तकालीन स्त्रियों में कला दक्षता: शिलालेखीय प्रमाणों पर आधारित अध्ययन

47.नारी रचनात्मकता और शिल्पकला: पारंपरिक विरासत का पुनरावलोकन

48.प्राचीन नारी-चित्रों में चौंसठ कलाओं की झलक

49.स्त्री-केंद्रित परंपरागत कलाओं का आधुनिक पुनर्पुनर्जागरण

50.साहित्य, संगीत और स्त्री: कलाओं के माध्यम से आत्मविकास

51.अष्टादश विद्यास्थान और स्त्री-शिक्षा: प्राचीन भारत में ज्ञान का लैंगिक वितरण

52.स्त्री की विदुषी छवि: अष्टादश विद्यास्थानों में स्त्रियों की भागीदारी का अनुशीलन

53.अष्टादश विद्याओं में स्त्री की उपस्थिति और अनुपस्थिति: एक स्त्रीवादी विश्लेषण

54.विद्यास्थान एवं नारी चेतना: प्राचीन से समकालीन संदर्भों तक

55.अष्टादश विद्यास्थान: क्या स्त्रियों के लिए भी समान अवसर?

56.स्त्री शिक्षा और अष्टादश विद्यास्थान: नीति, परंपरा और परिवर्तन

57.संस्कृत साहित्य और अष्टादश विद्यास्थान: विदुषी स्त्रियों के योगदान की पुनर्समीक्षा

58.गर्गी से मैत्रेयी तक: अष्टादश विद्यास्थानों में स्त्रियों की भूमिका

59.नारी और तर्कविद्या: स्त्री बुद्धि के विमर्श में अष्टादश विद्यास्थान

60.अष्टादश विद्यास्थान और स्त्री-अधिकार: शिक्षा में समता की खोज

61.स्त्री एवं श्रव्यकला, गानविद्या, नाट्यविद्या: अष्टादश विद्याओं में स्त्री-अभिव्यक्ति के आयाम

62.धर्म, न्याय और स्त्री: अष्टादश विद्यास्थानों की न्यायशास्त्रीय दृष्टि

63.स्त्री दृष्टिकोण से शिक्षा का पुनर्पाठ: अष्टादश विद्यास्थानों का मूल्यांकन

64.शास्त्र, शिल्प और स्त्री: विद्यास्थानों की बहुपरतीय स्त्री-भूमिकाएँ

65.अष्टादश विद्यास्थानों का समकालीन नारी शिक्षा में पुनर्प्रयोग

66.वेदांगों में स्त्री-अभिगम्यता: पुरातन भारतीय शिक्षा पद्धति की परीक्षा

67.ज्ञान के स्रोत और स्त्री का स्थान: अष्टादश विद्यास्थान की आलोचना

68.स्त्री-शिक्षा और संस्कृत ज्ञान परम्परा: अष्टादश विद्यास्थानों का योगदान

69.अष्टादश विद्यास्थान और मातृत्व: स्त्री के सामाजिक ज्ञान की भूमिका

70.शिक्षा में लिंगभेद: अष्टादश विद्यास्थानों में स्त्री की स्थिति का पुनरावलोकन

पंजीकरण व प्रमाणपत्र

- **ऑनलाइन पंजीकरण लिंक**

Scan/Click to Register	**शोध-अध्येताओं के लिए निबन्धन लिंक** **सभी के लिए अनिवार्य** https://forms.gle/AXKejkjvyJM6x7JK6

- **प्रमाणपत्र:** सभी सहभागियों को नियमानुरूप ई-प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा। इस निमित्त रजिस्ट्रेशन, शोधसार स्वीकृति, शोधपत्र स्वीकृति, शोधपत्र/शोधसार प्रस्तुति, पीपीटी प्रेषण एवं प्रतिस्पन्द आवश्यक होगा।

आयोजन समिति

लिंक (सदस्यों के लिये)

https://forms.gle/wrq3fvyLnknCEtE39

Scan/Click to Register

मुख्यपरामर्शक	मार्गदर्शकमण्डल	केन्द्रीभूत सदस्य	अन्ताराष्ट्रिय प्रतिनिधि
प्रो श्रीनिवास वरखेडी प्रो असंग तिलकरत्ने प्रो विजय कुमार कर्ण प्रो. रिपुसूदन सिंह डॉ सुमन् के एस्	प्रो शशिनाथ झा श्री राजकुमार झा प्रो काशीनाथ न्यौपाने प्रो मखलेश उपाध्याय प्रो अनिल प्रताप गिरि	**संरक्षक** डॉ सदानन्द झा **कार्यक्रम निदेशक** डॉ बिपिन कुमार झा **आयोजक सचिव-** डॉ दीपिका दीक्षित **संयोजक** डा धनंजय कुमार झा **सह संयोजक** डा. सुदर्शन चक्रधारी **छात्रसंयोजक** : प्रीती, विश्वेश्वर, प्रिया, चक्रदत्त, अरुणेश	**सिंगापुर-** श्री अरविन्द लोचन **अटलाण्टा-** आचार्य वेदश्रमी **नार्वे-** विचाराधीन नाम, **मारीशस-** विचाराधीन नाम **श्रीलंका-** प्रो विमल हेवांगमे **नेपाल** डा आनन्द कुमार त्रिपाठी

		ईमेल: bipinkumarjha.web@gmail.com **मोबाइल:** +91-8627938398 **वेबसाइट:** bipinkumarjha.com **आयोजक** जाह्नवी संस्कृत ई जर्नल	
आयोजन समिति विशिष्ट सदस्य	डा बलदेवानन्द सागर, प्रो अनिल प्रताप गिरि एवं अन्य		
आयोजन समिति सदस्य	संस्कृतान्तर्वीक्षा के पदेन समस्त सदस्य		
सह-आयोजक संस्थाएं	विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्था एक सामान्य नियम का परिपालन करते हुए कोलैब्रेशन कर कार्यक्रम में सहभागी हो सकते है।		
विविधसंस्थाओं से नामित सदस्य	प्रत्येक विश्वविद्यालय/महाविद्यालय से एक/दो आचार्य नामित हो सकते है		

भारतवर्ष के विविध राज्यों के प्रतिनिधि

क्रम	राज्य	आयोजन समिति सदस्य	संस्था
1	आंध्र प्रदेश	डा एस् टी पी कनकवल्ली	
2	अरुणाचल प्रदेश		
3	असम	डा. सागरिका	
4	बिहार	डा बालमुकुन्द मिश्र डा राजनाथ झा	
5	छत्तीसगढ़	श्रीमती तनूजा	
6	गोवा		
7	गुजरात	डा लतिका चाबडा	
8	हरियाणा	डा नरेश शर्मा डा राधावल्लभ शर्मा	
9	हिमाचल प्रदेश	डा श्रीनाथधर द्विवेदी डा विवेक शर्मा श्री पुष्पराज शर्मा	
10	झारखंड	डा धनंजय वासुदेव द्विवेदी	
11	कर्नाटक	डा पी गौरी	
12	केरल	आर अश्वनी	
13	मध्य प्रदेश	डा ज्योत्स्ना द्विवेदी	

		डा स्वीटी रानी	
14	महाराष्ट्र	डा रेणुका शरद बोकारे	
15	मणिपुर		
16	मेघालय		
17	मिजोरम		
18	नागालैंड	डा प्रभाकर शर्मा	
19	ओडिशा	डा सुशान्त होता	
20	पंजाब	डा पष्पेन्द्र	
21	राजस्थान	प्रो अनीता जैन	
22	सिक्किम		
23	तमिलनाडु		
24	तेलंगाना	डा शिवा माधुरी	
25	त्रिपुरा	डा मंजूषा चेनम्मो	
26	उत्तर प्रदेश	डा सरिता श्रीवास्तव डा रति सिंह	
27	उत्तराखंड	डा दिनेश पाण्डेय डा रमेशचन्द्र नैलवाल	
28	पश्चिम बंगाल	डा रचना रस्तोगी डा. दीपांकर दत्त	
29	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह		
30	चंडीगढ़		
31	दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव		
32	जम्मू और कश्मीर	डा सुजीत पाडेय डा रिपुदमन पंडित	
33	लद्दाख		
34	लक्षद्वीप		
35	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	डा श्लेषा सचिन्द्र श्रीमती शैलजा	
36	पुडुचेरी		

॥ शम् ॥